ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 5 कुल पृष्ठ-8 18 से 24 अक्टूबर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 आ.कृ.-08

महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय दयानन्द मठ, चम्बा का वार्षिकोत्सव एवं

दुर्लभ शारद यज्ञ का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

यज्ञ का ब्रह्मत्व स्वामी सवितानन्द जी महाराज ने किया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामय उपस्थिति एवं आचार्य महावीर जी का रहा कुशल संयोजन

आर्य समाज के वीतराग, तपोनिष्ठ एवं कर्मठ संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) की तपःस्थली दयानन्द मठ चम्बा में संचालित महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं प्रतिवर्ष होने वाले दुर्लभ शारद यज्ञ का भव्य आयोजन दिनांक 7 से 11 अक्टूबर, 2018 तक बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ आयोजित हुआ। दयानन्द मठ चम्बा हिमालय की सुरम्य वादियों में रावी नदी के तट पर स्थित आर्य समाज का एक ऐसा केन्द्र है, जहाँ वीतराग आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने तप किया और हजारों स्नातक अपने संस्कृत महाविद्यालय से तैयार करके आर्य समाज को सौंप दिया। यह दयानन्द मठ चम्बा की ही देन है कि चम्बा जिले का कोई ऐसा सरकारी विद्यालय नहीं है जिसमें संस्कृत का अध्यापक दयानन्द मठ चम्बा का स्नातक न हो। स्वामी सुमेधानन्द जी ने मठ में ही दुर्लभ शारद यज्ञ का शुभारम्भ 18 वर्ष पहले किया, जो वर्तमान तक निरन्तर चल रहा है। मठ का संचालन वर्तमान में मठ के यशस्वी और सुलझे हुए वैदिक विद्वान् आचार्य महावीर सिंह शास्त्री बड़ी कुशलता के साथ कर रहे हैं। मठ में संचालित उच्च विद्यालय की विशेषता यह है कि यहाँ के छात्र यज्ञ में वेद पाठ का महत्त्वपूर्ण दायित्व स्वयं संभालते हैं और वेद पाठ का यह अभ्यास आचार्य महावीर जी स्वयं छात्रों को कराते हैं। इस वार्षिक उत्सव एवं शारद यज्ञ में देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु आर्यजन बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं और अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। वार्षिकोत्सव में विद्यालय के छात्रों ने अनेक आकर्षक प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया और अभिभावकों एवं दर्शकों का मनमोह लिया। इस अवसर पर आयोजित शारद यज्ञ के ब्रह्म स्वामी सवितानन्द जी सरस्वती की विशेष तपस्या से यज्ञ निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त वैदिक विरक्त मण्डल के सदस्य संन्यासीगण भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। मुख्यतया स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी शान्तानन्द जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी, स्वामी महानन्द जी, महात्मा सम्मानमुनि जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य महावीर जी की अध्यक्षता एवं श्रीमती करुणा आर्या के संयोजन में जिन महानुभावों ने अपना योगदान दिया उनमें श्रीमती सरस्वती देवी आर्या, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के पदाधिकारी एवं सदस्यगण मुख्यतया (श्री अमर सिंह आर्य, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी, श्री योगराज आर्य, श्री रमेश चन्द्र शास्त्री, श्री राजीव शास्त्री, श्री सुनील शास्त्री, श्री संजय शास्त्री, श्री मनोज कुमार आदि) सर्वश्री सुरेन्द्र भारद्वाज पूर्व विधायक, श्री कुन्दल लाल गुप्ता पूर्व प्रधानाचार्य, श्री विक्रम महाजन प्रधान आर्य समाज चम्बा आदि थे।

इस पूरे कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने के लिए विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बृजबाला गुप्ता एवं श्रीमती करुणा आर्या के निर्देशन में विद्यालय के सभी शिक्षक एवं कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर अपना सहयोग प्रदान किया, जिनमें प्रमुख रूप से श्रीमती अनिता शर्मा, श्रीमती कामिनी शर्मा, श्रीमती अनीता ठाकुर, श्रीमती डिम्पल ठाकुर, श्री सुमित सिंह, सुश्री ज्योति शर्मा, श्री अभिषेक महाजन, सुश्री ममता, श्रीमती कामिनी देवी, श्रीमती बबिता, सुश्री मीनाक्षी ठाकुर, सुश्री चम्पा, सुश्री निशा, श्री नरेश कुमार, श्रीमती कामनी, श्रीमती मंजुला, श्रीमती वन्दना, श्रीमती रजनी, सुश्री डिम्पल, सुश्री नेहा अत्री, सुश्री नेहा शर्मा, श्रीमती मीनाक्षी, श्रीमती मनीषा, शेष पृष्ठ 6 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

दिव्य जीवन का वास्तविक स्वरूप

– श्री कृष्ण गोयल योगाचार्य

अज्ञान के कारण मनुष्य अपने आपको औरों से भिन्न समझता है, इसी से अहंकार उत्पन्न होता है, मैं एवं मेरेपन की भावना उत्पन्न होती है, खींचा–तानी स्वार्थ, भ्रष्टाचार आदि उत्पन्न होते हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व सुकड़ जाता है तथा दिव्य शक्तियाँ गुण ज्ञान सीमित हो जाते हैं। निरन्तर प्रगति करने वाला जीवन दुःखों का घर बन जाता है। जब आप एकता के शुद्ध प्रेममय सूत्र का पालन करेंगे तो आपका अहंकार समाप्त हो जायेगा, आपके जीवन में दिव्यता का तेज आयेगा तथा आपके मन में लेने तथा छीनने की बजाये देने का भाव उत्पन्न होगा। कुछ दिनों के प्रयास से आप सदा–सदा के लिए अहंकार मुक्त हो जायेंगे तथा आपका परमपिता परमात्मा से अटूट सम्बन्ध हो जायेगा। आप के भीतर परमात्मा के गुण ज्ञान शक्तियां वृद्धिशील होकर कार्यरत होंगी, कल्पनातीत प्रगति होगी।

दिव्य शब्द का अर्थ है परम तत्व जो सभी का मूल है। वह परम शक्ति जिससे समस्त ब्रह्माण्ड उत्पन्न होता है, उसी में बढ़ता फलता फूलता है तथा उसी में विलीन हो कर पुनः–पुनः उत्पन्न होता है। हमारे मनुष्य लोक की भांति अनंत अन्य लोक आकाश तथा पाताल में हैं, इनके बारे में किसी को भी पूरा पता नहीं है। प्रत्येक लोक के अपने–अपने नियम हैं तथा उनकी अपनी–अपनी निर्धारित जीवन शैली है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सभी लोक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। धरती के अतिरिक्त अन्य लोक सीमित हैं तथा वहां कोई परिवर्तन या प्रगति नहीं है। केवल पृथ्वी ही एक ऐसा लोक है जिसमें परिवर्तन तथा प्रगति है, इसी कारण मनुष्य के जीवन की सर्वाधिक महिमा है। इस लेख में धरती पर दिव्य जीवन जीने के कुछ महत्त्वशाली, प्रभावकारी एवं लाभकारी सूत्रों की चर्चा की जा रही है जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य के जीवन में परमशान्ति, आनन्द, प्रेम एकता तथा सर्वांगीण प्रगति के पुष्प विकसित हों तथा मनुष्य को अपने जीवन की गरिमा एवं महानता का बोध हो।

एकता – दिव्य जीवन का सबसे महत्त्वशाली सूत्र है कि हम सब एक हैं तथा आपस में दृढ़ता से जुड़े हुए हैं। हमें इस सूत्र का निरन्तर चिन्तन एवं ध्यान करना चाहिए तथा प्रयत्न करके इसका आचरण करना चाहिए। अपने कर्म एवं व्यवहार में इस शुद्ध प्रेम के सूत्र के पालन द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अपना अभिन्न अंग समझना चाहिए। ऐसा करने से सभी प्रकार के भेद भाव, बैर, घृणा, द्वेष आदि समाप्त हो जायेंगे। इस एक सूत्र के सप्रयास पालन से जीवन का रूपान्तरण प्रारम्भ हो जायेगा जो कि सतत् प्रक्रिया हैं। कुछ क्षणों के लिए आंखें मूंद कर कल्पना करें कि सब कुछ जुड़ा हुआ है। समुद्र, पृथ्वी, पौधे, पशु पक्षी, मनुष्य, अग्नि, हवा, आकाश, सूर्य चांद सितारे आदि आपके भीतर समाये हुए हैं तथा आपके भीतर से बाहर की ओर प्रकट हो रहे हैं। आपकी चेतना उच्चताओं, गहनताओं तथा विशालताओं को प्राप्त होगी। अपने आपको मक्खन की तरह मुलायम कर लें, शहद की तरह मीठा तथा खीर की भांति स्वादिष्ट कर लें। आप के जीवन में प्रेम की बहारें आ जायेंगी। आपका व्यक्तित्व सभी के भीतर शुद्ध प्रेम से प्रवेश करके उनको अपना बनायेगा तथा उनको भी परिवर्तन की प्रेरणा देगा।

अहंकार की समाप्ति :– अज्ञान के कारण मनुष्य अपने आपको औरों से भिन्न समझता है, इसी से अहंकार उत्पन्न होता है, मैं एवं मेरेपन की भावना उत्पन्न होती है, खींचा–तानी स्वार्थ, भ्रष्टाचार आदि उत्पन्न होते हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व सुकड़ जाता है तथा दिव्य शक्तियाँ गुण ज्ञान सीमित हो जाते हैं। निरन्तर प्रगति करने वाला जीवन दुःखों का घर बन जाता है। जब आप एकता के शुद्ध प्रेममय सूत्र का पालन करेंगे तो आपका अहंकार समाप्त हो जायेगा, आपके जीवन में दिव्यता का तेज आयेगा तथा आपके मन में लेने तथा छीनने की बजाये देने का भाव उत्पन्न होगा। कुछ दिनों के प्रयास से आप सदा–सदा के लिए अहंकार मुक्त हो जायेंगे तथा आपका परमपिता परमात्मा से अटूट सम्बन्ध हो जायेगा। आप के भीतर परमात्मा के गुण ज्ञान शक्तियां वृद्धिशील होकर कार्यरत होंगी, कल्पनातीत प्रगति होगी।

परम शान्ति :– जब आपके जीवन में शुद्ध प्रेम उत्पन्न हो जाएगा, अहंकार से मुक्ति हो जाएगी, आपको परम शांति प्राप्त होगी। जीवन की घटनाएं, व्यक्तियों का व्यवहार तथा परिस्थितियां आपके मन को अशांत नहीं करेंगी। आपके भीतर एक स्थिर घनीभूत शांति का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। जब भी समय मिले कृपया आंखे मूंदकर महसूस करें कि आपके शरीर का कण–कण पूरी तरह शांत है। आपका शरीर भगवान की

परम शांति की प्रतिमा बन जाएगा। आप शांत आकार हो जायेंगे। कृपया शांत होकर अधिक से अधिक काम करें। एक ऐसी स्थिति आ जाएगी कि आप कार्य करते थकेंगे ही नहीं। आपकी कार्यक्षमता में आशातीत वृद्धि होगी तथा मौलिक नव ज्ञान उत्पन्न होगा। आप प्रगति के शिखरों को स्पर्श करेंगे आपके जीवन में जीने का रस उत्पन्न होगा।

परम आनंद :– हमारे शरीर के कण कण में आनंद है अज्ञान के कारण हमें इस का बोध नहीं है। बाहर से जो खुशी या सुख हमें प्राप्त होता है वह इस आनंद का आभास मात्र है तथा इच्छा की पूर्ति पर निर्भर है, अस्थाई है एवं पराश्रित है। हमारा आंतरिक आनंद स्थाई, स्थिर, स्वतंत्र तथा वृद्धिशील है। जब आपके भीतर एकता, शांति तथा अहंकार से मुक्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा तो स्वयं ही आत्मानंद की अनुभूति होगी। आनंद परमशांत प्रेम की घनीभूत स्थिति है, इसमें भावनाओं के उछलकूद के लिए कोई स्थान नहीं है। कभी–कभी आंखें मूंदकर महसूस करें कि आप परम आनंद की स्थिर घनीभूत प्रतिमा है तथा समस्त आनंद से परिपूर्ण है। आनंद को महसूस करना जीना तथा प्रसारित करना मनुष्य जीवन का सहज स्वभाव होना चाहिए। शांति प्रेम आनंदमय जीवन जीने से मनुष्य के जीवन की समस्त कालिमायें दूर हो जाएगी तथा मानवता की स्वच्छ पताका ऊर्ध्व लोकों में फहरायेगी।

असीम शक्ति :– मनुष्य के कण–कण में इतनी शक्ति है कि अज्ञान के कारण हमें इसका बोध नहीं है। यदि हमें इस परम असीम शक्ति को जाग्रत करना तथा धारण करना आ जाए तो समस्त दुःखों, रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है, इच्छानुसार जीवन को दीर्घ किया जा सकता है। प्राचीन काल में भारत के योगी ऋषि लाखों–लाखों साल जीवित रहते थे। ऐसा होना आज भी पूरी तरह संभव है। कृपया विश्वास करें कि अज्ञान, बीमारी तथा मृत्यु की कोई सत्ता नहीं है, मृत्यु तथा बीमारी से कभी भी डरें मत तथा किसी भी स्थिति में मृत्यु को मत चाहें, आप मृत्युविजयी हो सकते हैं। पूर्वोक्त शांति, आनंद, प्रेम एकता, अहंकार मुक्ति का चिंतन करने के उपरांत महसूस करें कि आपके शरीर के कण–कण में असीम शक्ति तथा स्थिर प्रकाश है एवं आपकी हड्डियां पत्थर की तरह मजबूत हैं। आपके शरीर की प्रत्येक कोशिका में असीम शक्ति आ जाएगी, समय पाकर सतत् अभ्यास से आप मृत्युविजयी हो जायेंगे। आप कभी बूढ़े नहीं होंगे तथा एक बहुत बड़ा चमत्कार होगा की जितनी–जितनी आपकी आयु बढ़ेगी, आपकी युवावस्था में वृद्धि होगी, शरीर में दिव्यता का तेज उत्पन्न होगा। आपको काम विजयी होना होगा तथा मन एवं इन्द्रियों का संयम अत्यावश्यक है।

कर्म कुशलता :– आपकी अहंकार से मुक्ति हो गई, आनंद प्रेम एकता असीम शक्ति परमशांति के आप मालिक हो चके हैं, मन इंद्रियों पर संयम है तथा काम पर विजय है। आपने परमात्मा के आज्ञाकारी दास की भांति बिना किसी इच्छा तथा आसक्ति के परमात्मा की सेवा के रूप में निरंतर क्रियाशील रहना है तथा सर्वांगीण प्रगति के लिए अपनी दिव्यशक्तियों का अधिक से अधिक प्रयोग करना है। इस प्रकार का दिव्य जीवन हमारी सहज अवस्था हो जाए तो समस्त मानवता के जीवन को रूपांतरित किया जा सकता है। आवश्यकता है संकल्पवद्ध होकर समर्पित भाव से कार्यरत होने की।

परमात्मा अनन्त है, उसे प्राप्त करने की विधियां अनंत हैं। उपरोक्त सूत्रों के पालन एवं अभ्यास से आपके जीवन में दिव्यता के बीज आरोपित हो जाएंगे जिन से अनंत वृक्ष उत्पन्न होकर धरती को पावन करेंगे। दिव्य जीवन जीने से आपका अपने शरीर पर, भावनाओं इच्छाओं संवेगों विचारों पर एवं प्राणशक्ति पर आधिपत्य हो जाएगा। आप अपने मालिक हो जाएंगे न कि दास, आप स्वानुशासित होंगे। विनम्रता, माधुर्य, कोमलता, सौंदर्य, सत्यम, शिवम, राष्ट्रीयता, मानवता, उत्साह आदि दैविक सम्पदायें आपको संरक्षण प्रदान करेंगी।

आज के संदर्भ में जब असत्य की शक्तियों के बोल बाले के कारण सर्वत्र हाहाकार है, भेदभाव है, असमानता है, अराजकता है, राजनेता सांप्रदायिकतावादी, पृथकतावादी, भ्रष्टाचारी, देशद्रोही, सत्ताखोरी, शोषक बने हुए हैं, केवल दिव्य जीवन की प्रखर धारा ही मानवता की रक्षा कर सकती है। आओ हम सब मिलकर दिव्यजीवन जियें तथा इसकी वास्तविक कल्याणकारी शक्तियों से धरती माता का कल्याण करें एवं राजनैतिक परिवर्तन करें जिससे राजसत्ता मानवतावादी दिव्य राष्ट्रप्रेमियों के हाथ आये। परमपिता परमात्मा हमारी सदा रक्षा करें तथा हमें इस पावन कार्य के लिए सद्बुद्धि तथा शक्ति प्रदान करें।

आध्यात्मिक पृष्ठभूमि होने के कारण भारत ही ऐसी क्रांति ला सकता है। आओ संकल्पवद्ध होकर दिव्य जीवन के हर आचरण द्वारा समस्त विश्व का आत्मानुसरण द्वारा मार्गदर्शन करें। दिव्यता की पताका सदा समुन्नत करें।

– 307 बी. पॉकेट 2 मयूर विहार फेस–1, दिल्ली–91, दूरभाष–011–22751806, 22794044

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

नारी की महानता को समझें

आवश्यकता इस बात की है कि हम नारी को समाज में वही प्रतिष्ठा दें, जिसकी आज्ञा हमारे ऋषियों–मनीषियों ने दी है। उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ाएँ। हम देखेंगे कि नारी अबला, असहाय न रहकर शक्ति सामर्थ्य की मूर्ति बनेगी। वह जीवनयात्रा में हमारे लिए बोझ न रहकर हमारी सहायक सहयोगिनी सिद्ध होगी। तब हमें उसके भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित न होना पड़ेगा। वह अपनी रक्षा करने तथा अपना निर्वाह करने में स्वयं समर्थ होगी। हमारे सामाजिक जीवन की यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण मांग है कि सदियों से घर की चहारदीवारी में बंद, परदे की ओट में छिपी हुई पराश्रिता, परावलंबी, अशिक्षित, अंधविश्वासग्रस्त संकीर्ण स्वभाव नारी को वर्तमान दुर्दशा से उबारें। उसे समानता, स्वतंत्रता की मानवोचित सुविधा प्रदान करें। उसे शिक्षित, स्वावलम्बी, सुसंस्कृत एवं योग्य बनायें, तभी वह हमारे विकास में सहायक बन सकेगी।

नारी पुरुष की पूरक सत्ता है। वह मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है, उसके बिना पुरुष का जीवन अपूर्ण है। नारी ही उसे पूर्ण करती है। मनुष्य का जीवन अंधकारयुक्त होता है, तो स्त्री उसमें रोशनी पैदा करती है।

पुरुष और नारी एक ही सत्ता के दो रूप हैं और परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। फिर भी कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व और त्याग के कारण पुरुष से नारी कहीं महान है। वह जीवनयात्रा में पुरुष के साथ ही नहीं चलती, वरन उसे समय पड़ने पर शक्ति और प्रेरणा भी देती है। उसकी जीवनयात्रा को सरस, सुखद, स्निग्ध और आनन्दपूर्ण बनाती है। नारी पुरुष की शक्तियों के लिए उर्वरक खाद का काम करती है। महादेवी वर्मा ने नारी की महानता के बारे में लिखा है :–

"नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं है, आदिम काल से आज विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सफल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी धरा पर स्वर्गीय ज्योति की साकार प्रतिमा है। उसकी वाणी जीवन के लिए अमृत स्रोत है। उसके नेत्रों में करुणा, सरलता और आनन्द के दर्शन होते हैं। उसके हास्य में संसार की समस्त निराशा और कड़वाहट मिटाने की अपूर्व क्षमता है, नारी संतप्त हृदय के लिए शीतल छाया है, वह स्नेह और सौजन्य की साकार देवी है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के शब्दों में, **"नारी पुरुष की शक्ति के लिए जीवन सुधा है। त्याग उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।"**

कवीन्द्र रवीन्द्र ने नारी के हास में जीवन निर्झर का संगीत सुना है। जयशंकर प्रसाद ने कहा है :–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग–पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

संसार के सभी महापुरुषों ने नारी में उसके दिव्य स्वरूप के दर्शन किए हैं, जिससे वह पुरुष के रूप में उसकी उन्नति, प्रगति एवं कल्याण का साधन बनती है। स्वयं प्रकृति ही नारी के रूप में सृष्टि के निर्माण, पालन–पोषण व संवर्द्धन का काम कर रही है। नारी के हाथ बनाने के लिए ही हैं, बिगाड़ने के लिए नहीं।

परिस्थितिवश, स्वभाववश नारी कितनी ही कठोर बन जाए, किन्तु उसकी वह सहज कोमलता कभी ओझल नहीं हो सकती, जिसके पावन अंक में संसार को जीवन मिलता है। प्रेमचन्द्र के शब्दों में, **"नारी पृथ्वी की भांति धैर्यवान, शांत और सहिष्णु होती है।"**

नारी की प्रकट कोमलता, सहिष्णुता को पुरुष ने कई बार उसकी निर्बलता का चिन्ह मान लिया है और इसलिए उसे अबला कहा है। किन्तु वह यह नहीं जानता कि कोमलता, सहिष्णुता के अंक में ही मानव जीवन की स्थिति सम्भव है। क्या माँ के सिवाय संसार में ऐसी कोई हस्ती है, जो शिशु की सेवा, उसका पालन–पोषण कर सके। संसार में जहां–तहां भी चेतना साकार रूप में मुखरित हुई है, उसका एकमात्र श्रेय नारी को ही है। वह समाज का धारण, पोषण और संवर्द्धन करती है।

नारी अपने विभिन्न रूपों में सदैव मानव जाति के लिए त्याग, बलिदान, स्नेह, श्रद्धा, धैर्य, सहिष्णुता का जीवन बिताती है। माता–पिता के लिए आत्मीयता, सेवा की भावना जितनी पुत्री में है, वैसी अन्यत्र नहीं होती। पराये घर जाकर भी पुत्री अपने माँ–बाप से जुदा नहीं हो सकती। उसमें परायापन नहीं आता, उसके हृदय में वही सम्मान सेवा की भावना भरी रहती है, जैसी बचपन में थी। भाई–बहन का नाता कितना आदर्श, कितना पुण्य पवित्र है। भाई–भाई परस्पर जुदा हो सकते हैं, एक–दूसरे का अहित कर सकते हैं, किन्तु भाई–बहन जीवनपर्यन्त कभी विलग नहीं हो सकते। बहन जहाँ भी रहेगी अपने भाई के लिए शुभकामनाएँ, उसके भले के लिए प्रयत्न करती रहेगी। माँ तो माँ ही है। पुत्र की हित चिन्ता उसका भला, लाभ, हित सोचने वाला माँ के समान संसार में और कोई नहीं है। संसार के सब लोग मुँह मोड़ लें, किन्तु एक माँ ही ऐसी है, जो अपने पुत्र के लिए सदा–सर्वदा सब कुछ करने के लिए तैयार रहती है।

पत्नी के रूप में नारी मनुष्य की जीवनसंगिनी ही नहीं होती, वह सब प्रकार के पुरुष का हितसाधन करती है। शास्त्रकार ने भार्या को छह प्रकार से पुरुष के लिए हितसाधक बतलाया है :–

कार्येषु मन्त्री, करणेषु दासी,
भोज्येषु माता, रमणेषु रम्भा।
धर्मानुकूला, क्षमया धरित्री,
भार्या च षड्गुणवती च दुर्लभा।।

"कार्य में मंत्री के समान सलाह देने वाली, सेवादि में दासी के समान काम करने वाली, भोजन कराने में माता के समान पथ्य देने वाली, आनन्दोपभोग के लिए रंभा के समान सरस, धर्म और क्षमा को धारण करने में पृथ्वी के समान क्षमाशील ऐसे छह गुणों से युक्त स्त्री सचमुच इस विश्व का एक दुर्लभ रत्न है।"

राम के जीवन से सीता को निकाल देने से रामायण में कुछ नहीं रहता। द्रौपदी, कुंती, गांधारी आदि का चरित्र निकाल देने पर महाभारत की महान गाथा कुछ नहीं रहती, पांडवों का जीवन संग्राम अपूर्ण रह जाता है। शिवजी के साथ पार्वती, कृष्ण के साथ राधा, राम के साथ सीता, विष्णु के साथ लक्ष्मी का नाम हटा दिया जाए तो इनके लीला, गाथा, चरित्र अधूरे रह जाते हैं।

प्राचीनकाल से नारियाँ घर–गृहस्थी को ही देखती नहीं आ रही, समाज, राजनीति, धर्म, कानून, न्याय सभी क्षेत्रों में वे पुरुष की संगिनी ही नहीं रहीं, वरन सहायक, प्रेरक भी रहीं हैं। उन्हें समाज में पूजनीय स्थान दिया गया है। महाराजा मनु ने भी अपनी प्रजा से कहा था :–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। समाज में नारी को सामान्य और पूज्य स्थान देकर जब इसे पुरुष का सहायक बना लिया जाता है तो ही समृद्धि, यश, वैभव बढ़ते हैं, जिससे सुख–शांति और आनन्दपूर्वक जीवन बिताया जा सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नारी का सहयोग मानव जीवन में उन्नति के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है। वह समाज उन्नति नहीं कर सकता, जहाँ स्त्री, जो मानव जीवन का अर्द्धांग ही नहीं एक बहुत बड़ी शक्ति है, को सामाजिक अधिकारों से वंचित कर उसे लुंज–पुंज एवं पददलित बनाकर रख जाता है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम नारी को समाज में वही प्रतिष्ठा दें, जिसकी आज्ञा हमारे ऋषियों–मनीषियों ने दी है। उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ाएँ। हम देखेंगे कि नारी अबला, असहाय न रहकर शक्ति सामर्थ्य की मूर्ति बनेगी। वह जीवनयात्रा में हमारे लिए बोझ न रहकर हमारी सहायक सहयोगिनी सिद्ध होगी। तब हमें उसके भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित न होना पड़ेगा। वह अपनी रक्षा करने तथा अपना निर्वाह करने में स्वयं समर्थ होगी। हमारे सामाजिक जीवन की यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण मांग है कि सदियों से घर की चहारदीवारी में बंद, परदे की ओट में छिपी हुई पराश्रिता, परावलंबी, अशिक्षित, अंधविश्वासग्रस्त संकीर्ण स्वभाव नारी को वर्तमान दुर्दशा से उबारें। उसे समानता, स्वतंत्रता की मानवोचित सुविधा प्रदान करें। उसे शिक्षित, स्वावलम्बी, सुसंस्कृत एवं योग्य बनायें, तभी वह हमारे विकास में सहायक बन सकेगी।

– युग निर्माण योजना से साभार

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत, उत्तर प्रदेश का विशाल आर्य महासम्मेलन जनता वैदिक इण्टर कॉलेज बड़ौत में आयोजित

महासम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह ने की

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश एवं केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह रहे विशिष्ट अतिथि

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के तत्वावधान में 13 अक्टूबर, 2018 को प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 2 बजे तक जिला आर्य महासम्मेलन का शानदार आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी ने की। सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह एवं मुख्य वक्ता के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से पधारे। उनके अतिरिक्त दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, पर्यावरणविद् डॉ. चन्द्रवीर राणा, नगर पालिका बड़ौत के चेयरमैन श्री अमित राणा, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, शामली के

प्रधान पं. रघुवीर सिंह आर्य, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद के प्रधान मा. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के प्रधान श्री रामपाल सिंह आर्य आदि महानुभाव भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को आर्य समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर नये–नये कथित धर्मगुरु पैदा हो रहे हैं और देश की जनता को अंधेरे की ओर धकेल रहे हैं। ऐसे समय में आर्य समाज को पाखण्ड–खण्डन का कार्यक्रम तीव्र गति से चलाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हमें धर्म का सच्चा स्वरूप जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए ताकि लोग भ्रमजाल से मुक्त हो सकें।

मुख्यअतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द को समर्पित होते हुए कहा कि वे आज जो कुछ भी हैं उसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज को जाता है। उन्होंने बताया कि बहुत बचपन में ही मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लिया था और उससे मुझे विशेष प्रेरणा मिली। डॉ. सत्यपाल सिंह ने सभी उपस्थित श्रोताओं को भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि दुनिया के अन्दर जितने मत–मतान्तर प्रचलित हैं वे सभी वेद से विपरीत विचारधारा को प्रश्रय देते हैं। अतः मानवता का हित केवल वेद के ज्ञान से ही सम्भव है।

डॉ. धीरज सिंह जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पिछले दिनों जौनपुर जिले के कई गाँव में इसाई प्रचारकों ने गरीब लोगों को अपने कुचक्र में फंसाकर इसाई बना लिया था। हम लोगों ने योजनाबद्ध तरीके से उन गाँवों में अभियान चलाया और 8 गाँवों में धर्म परिवर्तित लोगों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित करने में सफलता प्राप्त की। डॉ. धीरज सिंह जी ने कहा कि आज गरीब लोगों में इसाई मिशनरी धन का लालच देकर उनका धर्मान्तरण कर रहे हैं जिसको रोकने के लिए आर्य समाज कृत–संकल्प है और उनकी सभा इस दिशा में विशेष रूप से प्रयत्नशील रहेगी।

श्री चन्द्रवीर राणा ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जागरूक होने पर बल दिया और उन्होंने बताया कि इस इलाके में जमीन के नीचे पानी पूरी तरह से प्रदूषित हो चुका है जिससे कई गाँवों में भयंकर रोग फैल रहे हैं। इस प्रदूषण के खिलाफ उनकी जंग जारी है और वे सर्वोच्च न्यायालय तक कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं और लोगों के बीच जाकर जागृति पैदा कर रहे हैं।

इस सम्मेलन का मंच संचालन आर्यवीर दल के योग्य व्यायाम शिक्षक श्री रवि शास्त्री ने संभाला हुआ था। उनके अतिरिक्त सम्मेलन की पूरी व्यवस्था में जिला सभा के मंत्री श्री रिपु दमन सिंह, श्री धर्मवीर आर्य, श्री विनोद कुमार आर्य, डॉ. महक सिंह आर्य आदि ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर आर्य समाज छपरौली के उपप्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य, उपप्रधान श्री अवनीश कुमार, श्री योगेन्द्र आर्य, श्री जयदेव आर्य, श्री राजसिंह आर्य पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, श्री नरेन्द्र आर्य, मा. राममेहर सिंह आर्य समाज ककौर, श्री

राजेन्द्र सिंह आर्य, मा. इन्द्र सिंह आर्य (रठौड़ा), ठेकेदार विक्रम सिंह कंडेरा, श्री सत्यवीर सिंह फौजी सिरसली, श्री विजय सिंह राठी टीकरी, श्री यशपाल शास्त्री–प्रधानाचार्य इण्टर कॉलेज, डॉ. धीरज सिंह शास्त्री–रमाला आदि महानुभाव भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। श्री रिपु दमन सिंह जिला सभा मंत्री ने अपने जिले की गतिविधियों की रिपोर्ट भी पढ़कर सुनाई। अन्त में स्वामी सुरेन्द्रानन्द ने भी शांति पाठ एवं आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मेरठ के तत्वावधान में जनपदीय आर्य महासम्मेलन मवाना में उत्साह एवं जोश-खरोश के साथ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के साथ किया उद्घाटन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मेरठ के तत्वावधान में गत् 5 से 7 अक्टूबर, 2018 को जनपदीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन लक्ष्मी देवी आर्य कन्या डिग्री कॉलेज मवाना, जिला-मेरठ में आयोजित किया गया। महासम्मेलन में आर्य जगत् की अनेक महान विभूतियाँ सम्मिलित हुई और अपने प्रवचन एवं व्याख्यानों से आर्यजनों का मार्गदर्शन किया। महासम्मेलन में 5 अक्टूबर को प्रातः 8 से 9 बजे तक यज्ञ आचार्य प्रणव शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया तथा 9 बजे ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों से हुआ। ध्वजारोहण के उपरान्त उद्घाटन सत्र में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन उपस्थित आर्यजनों ने दत्तचित्त होकर सुना।

स्वामी आर्यवेश जी ने समाज में व्याप्त विविध कुरीतियों को मिटाने के लिए आर्य समाज को युद्ध स्तर पर कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से धर्म के क्षेत्र में अन्धविश्वास एवं पाखण्ड चरम सीमा तक पहुंच गया है। भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी होती जा रही हैं। जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता समाज को कमजोर कर रहे हैं। नशाखोरी, महिला उत्पीड़न तथा शोषण बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन शुरू करना होगा और इसके लिए जन-जागृति अभियान छेड़ना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज नैतिक मूल्यों को जिस प्रकार से तार-तार किया जा रहा है, वह हम सबके लिए घोर चिन्ता का विषय है। हमारे देश की उच्च स्तरीय वैधानिक संस्थाएँ जिनके ऊपर नैतिक मूल्यों की सुरक्षा का दायित्व है वे ही विवेकहीन निर्णय देकर समाज के ढांचे को कमजोर कर रही हैं। इन सभी समस्याओं के विरुद्ध आर्य समाज प्रारम्भ से ही अपनी आवाज उठाता रहा है और भविष्य में भी हम लोगों को और अधिक प्रभावशाली तरीके से अपनी आवाज उठानी चाहिए। जिला आर्य महासम्मेलन में ईश्वर व वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन, संस्कारित शिक्षा सम्मेलन आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर सम्मेलन आयोजित किये गये। इन सम्मेलनों में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध आर्य संन्यासी तपोनिष्ठ स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ, योगनिष्ठ स्वामी परमवीर जी महर्षि पतंजलि योग विद्यापीठ, स्वामी राजेन्द्र देव, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह, आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के प्रधान डॉ. धीरज सिंह, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. मंजू शिवाच विधायक मोदीनगर, श्री दिनेश खटीक विधायक हस्तिनापुर, श्री पंकज कुमार आर्य अध्यक्ष आर्य वीरदल उ. प्र., डॉ. शिव कुमार शास्त्री सहारनपुर, डॉ. महावीर सिंह मेरठ, वैदिक प्रवक्ता आचार्य प्रणव शास्त्री, डॉ. वेदपाल मेरठ, श्री वीरेन्द्र रत्नम उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र., डॉ. अशोक कुमार ए.एस. इण्टर कॉलेज मवाना, मा. सत्येन्द्र आर्य खतौली, श्री ओमवीर सिंह उपाध्यक्ष श्रद्धा ग्रुप चीनी मील, श्री योगेश कुमार आर्य समाज बुढ़ाना गेट मेरठ, श्री राजेश सेठी मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा मेरठ एवं युवा आर्य भजनोपदेशक श्री अजय आर्य आदि ने अपने व्याख्यानों एवं प्रवचनों से आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया।

इस महासम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्था जिला सभा के प्रधान श्री विद्या सागर आर्य के नेतृत्व में, जिला सभा के मंत्री श्री जिले सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सुनील कुमार आर्य, स्वागताध्यक्ष श्री अनुराग दुबलिस, मुख्य संयोजक श्री पवन कुमार सर्राफ, संयोजक श्री सौदान सिंह, संयोजक श्री विजय पाल आर्य, जिला सभा के उपप्रधान श्री राजेश सेठी, उपप्रधान मुकेश आर्य, उपमंत्री कुसुम पाल एवं उर्मिला आर्या, अधिष्ठाता आर्य वीरदल श्री निरंजन सिंह आर्य एवं श्री सोहन वीर सिंह आर्य आदि ने विशेष परिश्रम करके सम्मेलन को सफल बनाया। इनके अतिरिक्त आर्य केन्द्रीय सभा मेरठ के प्रधान कर्नल श्री प्रमोद पाल, मंत्री श्री राजेश सेठी, कोषाध्यक्ष श्री सुनील आर्य, क्षेत्रीय आर्य समिति तहसील मवाना के प्रधान श्री राजमुनि वानप्रस्थी, मंत्री डॉ. सत्यवीर सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सुनील कुमार गुप्ता, क्षेत्रीय आर्य समिति तहसील सरधना के प्रधान श्री वेदराम आर्य, मंत्री मा. बदन सिंह, कोषाध्यक्ष मा. जगदेव, तहसील संयोजक सर्वश्री सलेक चन्द्र आर्य सरधना, डॉ. सुखवीर सिंह मवाना, श्री राजेन्द्र सेठी मेरठ शहर, श्री धर्मवीर आर्य मेरठ ग्रामीण आदि महानुभावों ने कार्यक्रम को अपना विशेष सहयोग दिया।

आर्य समाज हांसी, जिला-हिसार (हरियाणा) में वेद प्रचार सप्ताह एवं वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों द्वारा नव-निर्मित महर्षि दयानन्द अतिथि निवास का उद्घाटन

आर्य समाज हांसी, जिला-हिसार में गत् 1 से 7 अक्टूबर, 2018 तक वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया जिसमें ख्याति प्राप्त विद्वान् आचार्य विद्यादेव गुरुकुल ग्रेटर नोएडा के प्रवचन एवं श्री कैलाश कर्मठ तथा श्री भूपेन्द्र आर्य के भजनोपदेश निरन्तर दोनों समय होते रहे। 7 अक्टूबर, 2018 को आर्य समाज का वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए उनके अतिरिक्त बम्बई से पधारे श्री मधुकान्त अग्रवाल, श्री संजय अग्रवाल, श्री मदन मोहन सेठी, आर्य समाज हिसार की ओर से श्री देवेन्द्र सैनी, श्री दलबीर सिंह आर्य एवं श्री सत्य प्रकाश आर्य आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। यह उत्सव मानवती देवी आर्य कन्या उच्च विद्यालय के प्रांगण में आयोजित किया गया था। सर्वप्रथम आर्य समाज में नव-निर्मित महर्षि दयानन्द भवन अतिथि निवास का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। उनके साथ समस्त विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित थे। तत्पश्चात् विद्यालय प्रांगण में कार्यक्रम

प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने अपने भजनों की प्रस्तुति दी। वैदिक विद्वान् आचार्य विद्यादेव जी, आचार्य आजाद मुनि जी, श्री जोशी कुमार शास्त्री एवं श्री कृष्णचन्द्र आर्य प्रधान के सार गर्भित व्याख्यान तथा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ। आर्य समाज की ओर से सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर विशेष सम्मान किया गया। स्मृति चिन्ह स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा दिलवाये गये। कार्यक्रम की सफलता में आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्ण चन्द्र आर्य बब्बर, मंत्री श्री राजकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नरेश अरोड़ा, उपमंत्री श्री फतेहसिंह आर्य व श्री चिमन लाल आर्य, सहमंत्री श्री रामअवतार, वेद प्रचार मंत्री श्री रामसिंह आर्य, उपमंत्री श्री रमेश खुराना, सलाहकार श्री सुरेश कुमार एडवोकेट, मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय के प्रधान श्री वेद नारंग एवं प्रधानाचार्या डॉ. तमन्ना, श्री दीपक आर्य, श्री मिथुन बंसल, श्री मित्रदेव नारंग, श्री दीवानचन्द आर्य आदि ने अपना विशेष योगदान दिया।

कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर की समुचित व्यवस्था की गई थी जिसमें उपस्थित समस्त आर्यजनों ने सुस्वाद भोजन ग्रहण किया।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक

स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुई सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती का भव्य समारोह मनाने का लिया गया निर्णय

हजारों आर्य युवकों का एक गणवेश एवं केसरिया पगड़ी में होगा प्रचण्ड शक्ति प्रदर्शन

नौजवानों! अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दो

आर्य समाज के सशक्त एवं सक्रिय युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना सन् 1967–68 में युवाओं के प्रेरणा स्रोत, त्यागी, तपस्वी, तेजस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा की गई थी। परिषद् के तत्वावधान में हजारों युवा निर्माण शिविर आयोजित करके लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का ऐतिहासिक योगदान किया है। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में परिषद् के संस्थापक पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस 10 मार्च, 2019 को एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसी के साथ परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' के गौरवमय प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जायेगा।

यह दोनों कार्यक्रम एक साथ आयोजित होंगे। इस सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए गत् 16 सितम्बर, 2018 को परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक हंगामी बैठक परिषद् के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे और बड़े जोश–खरोश के साथ स्वर्ण जयन्ती समारोह को मनाने के लिए सभी ने पूरी ताकत लगाकर कार्य करने का संकल्प लिया। यह स्वर्ण जयन्ती समारोह आर्य समाज में युवाओं को दीक्षित करने के लिए अपनी विशेष भूमिका निभायेगा। परिषद् ने निश्चय किया है कि पिछले 50 सालों में जिन–जिन महानुभावों ने परिषद् में कार्य किया है उनका समारोह में विशेष सम्मान किया जायेगा। यह प्रयास किया जायेगा कि 50 जीवनदानी कार्यकर्ता परिषद् का कार्य करने के लिए उस दिन संकल्प ले सकें। स्वर्ण जयन्ती समारोह की विस्तृत योजना एवं कार्यक्रम शीघ्र ही तैयार करके पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा। बैठक में मुख्य रूप से परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, उपमंत्री प्रिं. आजाद सिंह जी, परिषद् की हरियाणा इकाई के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास जी, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अशोक आर्य, श्री अजीत पाल आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, श्री श्यामलाल आर्य, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट, श्री तलवीर सिंह आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री जयवीर आर्य सोनी, मा. हरपाल सिंह, मा. प्रवीण कुमार, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, कु. रिंकू आर्या, कु. शशि आर्या, एच.सी.एस., कु. रीमा आर्या आदि उपस्थित थे। बैठक का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बड़ी कुशलता से किया।

पृष्ठ 1 का शेष

दयानन्द मठ, चम्बा में दुर्लभ शारद यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न

श्रीमती शोभना, श्रीमती मीना कुमारी, श्रीमती पूनम, सुश्री अर्चना, सुश्री शबनम आदि प्रमुख रहे।

यज्ञ में भाग लेने के लिए मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा आदि प्रान्तों से भी कई महानुभाव पधारे हुए थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर हिमाचल प्रदेश विधानसभा के डिप्टी स्पीकर श्री हंसराज विशेष रूप से आहुति प्रदान करने के लिए उपस्थित हुए। उन्होंने अपने उद्बोधन में जहाँ मठ की गतिविधियों एवं विद्यालय की उपलब्धियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की वहीं अपनी ओर से कार्यक्रम के लिए 51 हजार रुपये की राशि दान स्वरूप देने की घोषणा की।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में जहाँ पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं दयानन्द मठ चम्बा को प्रेरणा का केन्द्र बताया। उन्होंने कहा कि जब–जब भी वे मठ में आते हैं यहाँ से कार्य करने की एक विशेष ऊर्जा लेकर जाते हैं। इसके पीछे पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जीवन और उनके कार्य ही मुख्य कारण हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने इस यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब देश के युवाओं में, जनता में वीररस या पौरुष या देशभक्ति समाप्त हो जाये तो ऐसे यज्ञों के माध्यम से देश की जनता और युवाओं को प्रेरित करने की आवश्यकता होती है, इसी विशेष भावना से यह यज्ञ आयोजित किया जाता है कि हमारे देश के युवक/युवतियाँ एवं देश की सम्पूर्ण जनता देशभक्ति एवं वीरता से ओत–प्रोत हो जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने अनेक उदाहरण देकर यज्ञ को समर्पण एवं परोपकार का एक सबसे सुन्दर उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि यज्ञ मनुष्य को समर्पण सिखाता है और इस समर्पण की भावना से ही कोई भी व्यक्ति अपने राष्ट्र या समाज के लिए बड़े से बड़ा त्याग एवं बलिदान देने के लिए तैयार हो सकता है। अतः ऐसे यज्ञ देश के विभिन्न भागों में आयोजित होने चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान किया कि वे दयानन्द मठ चम्बा की गतिविधियों से जुड़ें और इसे एक सशक्त एवं रचनात्मक केन्द्र बनाने में अपना योगदान दें। मठ की भावी योजना के अनुसार संस्कृत महाविद्यालय आगामी सत्र से प्रारम्भ करने के लिए स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल प्रयत्नशील है और आशा है कि यह अवश्य ही शुरू होगा। मठ के माध्यम से अन्य भी विविध सामाजिक गतिविधियाँ वर्षभर में संचालित होती रहती हैं। इस यज्ञ में अपने भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए योगदान देने हेतु युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य एवं श्री सतीश सुमन की भजन पार्टियाँ भी कार्यक्रम में उपस्थित थीं। विद्यालय के छात्रों एवं स्नातकों द्वारा भी बीच–बीच में भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया और पूरा कार्यक्रम अत्यन्त रोचक, प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद रहा। इस पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन आचार्य महावीर जी ने किया और उन्होंने सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए आयोजन की सफलता के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। इन दिनों में मठ की ओर से ऋषि लंगर की शानदार व्यवस्था की गई थी।

मानव सेवा प्रतिष्ठान

60 बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली–110029, मो.:– 9810283782, 9968357535

द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मान्यवर महोदय, मानव सेवा प्रतिष्ठान निर्धन, आश्रयविहीन एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान कर उत्साहवर्धन करता है तथा समाज सेवा में समर्पित विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करता है। आप सभी कार्यक्रमानुसार सादर आमंत्रित हैं।

आपकी सेवा में निवेदन है कि मानव सेवा प्रतिष्ठान गत 20 वर्षों से विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रचार प्रसारार्थ जीवन दानी, विद्वान्, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन करने के कार्य में संलग्न है। उसी श्रृंखला में इस वर्ष भी यह छात्रवृत्ति प्रदान समारोह दिनांक 4 नवम्बर, 2018 को दीनबन्धु छोटूराम भवन, केशवपुरम्, दिल्ली–110035 में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य में प्रातः 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक सम्पन्न होगा।

कार्यक्रम

हवन	:	प्रातः 8 बजे
ब्रह्मा	:	डॉ. सुकामा जी (आचार्या कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक)
यजमान	:	श्री नरजीत सिंह छिकारा, श्री बलजीत सांगवान आदि।
अध्यक्षता	:	श्री आजाद सिंह लाकड़ा (प्रधान, जाट मित्र मण्डल, दिल्ली)
उद्घाटन	:	स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
मुख्य अतिथि	:	श्री रामस्वरूप आर्य (प्रधान, नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)
	:	श्री केशव बलदेव प्रसाद तिवारी (अमस्तरडैम नीदरलैण्ड)
	:	चौधरी देवदत्त डबास (प्रधान, मानव सेवा प्रतिष्ठान, यू. एस.ए.)
	:	श्री अमरीश तिवारी (प्रधान, आर्य समाज नीदरलैण्ड)
विशिष्ट अतिथि	:	पं. नरदेव यजुर्वेदी (नीदरलैण्ड)
	:	डॉ. जगवीर सिंह (सचिव नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी)
	:	श्रीमती सुशीला बलदेव मलहु (प्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान सूरीनाम)
	:	श्री सुरेन महाबली जी (प्रधान, फासनेत नीदरलैण्ड)
	:	श्री पं. ग्रेशन स्वयम्बर (प्रतिनिधि आर्य सभा नीदरलैण्ड)

वक्तागण : स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र.), पण्डिता प्रिया जयपाल जी (प्रधाना, आर्य सभा समाज, रोटरडैम हॉलैण्ड), श्रीमती लीला बदलु जी (देनहॉक हॉलैण्ड), मा. रामकुमार जी गहलावत (सांपला, हरियाणा), श्री जसबीर सिंह मलिक (सम्पादक जाट रत्न रोहतक), श्री ओम दलाल जी (सदस्य नॉर्थ अमेरिका जाट चैरिटी), श्रीमती सन्तोष आर्या (अमेरिका), डॉ. अजय कुमार शास्त्री (जे.एन.यू.), डॉ. अनिल दलाल (हिसार), डॉ. अमर कौर आर्या (करनाल)।

छात्रवृत्ति वितरण : इस शुभ अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्थ अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा चयनित विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के अनेक छात्र–छात्राओं को लाखों रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी।

निवेदक – श्री रामपाल शास्त्री, कार्यकारी प्रधान

करेला रक्तशोधक व डायबिटिज में फायदेमंद

करेला अपने आप में एक औषधि है। करेला खाने या उसका जूस पीने से आपके स्वास्थ्य में काफी फायदा होता है। यह आपका खून से लेकर लीवर तक ठीक रखता है। करेला चिकित्सकीय औषधियों में भी काम में लाया जाता है, हालांकि यह टेस्ट में कड़वा और आंखों को नहीं सुहाता है। लेकिन रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से बहुत सी समस्याएँ दूर होती हैं। कच्चे करेले का जूस बहुत फायदेमंद है क्योंकि इसमें सभी जरूरी विटामिन्स और एंटी–ऑक्सीडेंटस होते हैं जोकि शरीर को चाहिए।

करेले के फायदे

1. ब्लड शुगर लेवल को कम करता है – शुगर को नियंत्रित करने के लिए आप तीन दिन तक खाली पेट सुबह करेले का जूस ले सकते हैं। मोर्मसीडिन और चैराटिन जैसे एंटी हाइपर गलेसेमिक तत्त्वों के कारण करेले का जूस ब्लड शुगर लेवल को मांसपेशियों में संचालित करने में मदद करता है।

2. बीजों में पॉलीपेप्टाइड–पी :– इसके बीजों में पॉलीपेप्टाइड–पी होता है जोकि इंसुलिन को काम में लेकर डायबिटिज रोगियों में शुगर लेवल को कम करता है।

3. भूख बढ़ाता है :– भूख नहीं लगने से शरीर को पूरा पोषण नहीं मिल पाता है जिससे कि स्वास्थ्य से सम्बन्धित परेशानियाँ होती हैं। इसलिए करेले के जूस को रोजाना पीने से पाचन क्रिया सही रहती है जिससे भूख बढ़ती है।

4. अग्नाशय के कैंसर के उपचार में उपयोगी :– रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से अग्नाशय का कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाएँ नष्ट होती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि करेले में मौजूद एंटी कैंसर कॉम्पोनेंटस अग्नाशय का कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं में ग्लूकोस का पाचन रोक देते हैं,

जिससे इन कोशिकाओं की शक्ति खत्म हो जाती है और ये भी खत्म हो जाती है।

5. सोराइसिस के लक्षणों को दूर करता है :– एक कप करेले के जूस में एक चम्मच नींबू का जूस मिला लें। इस मिश्रण का खाली पेट सेवन करें। तीन से छह महीने तक इसका सेवन करने से त्वचा पर सोराइसिस के लक्षण दूर होते हैं। यह आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है और सोराइसिस को प्राकृतिक रूप से ठीक करने में मदद करता है।

6. लीवर से विषैले पदार्थ निकालता है :– रोजाना एक गिलास करेले का जूस पीने से लीवर मजबूत होता है क्योंकि यह पीलिया जैसी बीमारियों को दूर रखता है। साथ ही यह लीवर से जहरीले पदार्थों को निकालता है और पोषण प्रदान करता है जिससे लीवर सही काम करता है और लीवर की बीमारियाँ दूर रहती है।

7. पाचन शक्ति बढ़ाता है :– करेले का जूस कमजोर पाचन तंत्र को सुधारता है और अपच को दूर करता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह एसिड के स्राव को बढ़ाता है जिससे पाचन शक्ति बढ़ती है। इसलिए अच्छी पाचन क्षमता के लिए सप्ताह में एक बार सुबह करेले का जूस जरूर लें।

8. आंखों की रोशनी बढ़ाता है :– लगातार करेले का जूस सेवन कर आप विभिन्न दृष्टि दोषों को दूर कर सकते हैं। करेले में बीटा–कैरोटिन और विटामिन 'ए' की अधिकता होती है, जिससे दृष्टि ठीक होती है। इसके अलावा इसमें उपस्थित विटामिन 'सी' और एंटी ऑक्सीडेंटस स्ट्रेस से होने वाली नजरों की कमजोरी से बचाता है।

9. ब्लड साफ करता है :– करेले का जूस शरीर में एक प्राकृतिक रक्तशोधक के रूप में कार्य करता है। यह जहरीले तत्त्वों को बाहर निकालता है और फ्री रेडिकल्स से हुए नुकसान से बचाता है। इसलिए ब्लड को साफ करने और मुहासों जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए रोज एक गिलास करेले का जूस जरूर पियें।

– एक्शन इंडिया, 14 अप्रेल, 2016 से साभार

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज गन्नौर शहर जिला–सोनीपत का 61वाँ वार्षिक यज्ञ महोत्सव

दिनांक 12, 13, 14 अक्टूबर, 2018 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य के ओजस्वी व्याख्यानों की रही धूम

आर्य समाज मंदिर गन्नौर, शहर जिला–सोनीपत (हरियाणा) का 61वाँ वार्षिक यज्ञ महोत्सव दिनांक 12 से 14 अक्टूबर, 2018 (शुक्रवार से रविवार) तक बड़ी भव्यता के साथ आयोजित हुआ। इस महोत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने तीनों दिन अपने ओजस्वी व्याख्यानों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। प्रो. विट्ठलराव आर्य के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ की पूर्णाहुति 14 अक्टूबर, 2018 रविवार को प्रातः 10 बजे की गई। तत्पश्चात् आयोजित समापन कार्यक्रम में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी सम्मिलित हुए। इस महोत्सव का आयोजन आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा से स्थानीय आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने विशेष प्रयत्न करके नगर के गणमान्य लोगों को आमंत्रित किया था और कार्यक्रम में प्रभावशाली उपस्थिति थी। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती संतोष आर्या एवं सुश्री रोशनी महलावत व ज्योति महलावत ने अपने भजनों से कार्यक्रम को और अधिक प्रभावशाली बना दिया।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने जहाँ आर्य समाज के सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला वहीं उन्होंने पूरे विश्व के स्तर पर किये जा सकने वाले कार्यों पर भी अपना दृष्टिकोण दिया। उन्होंने विकास की वर्तमान अवधारणा को चुनौती देते हुए कहा कि वर्तमान समय में जिस प्रकार से मानव विनाश की तरफ धकेला जा रहा है उसे रोकने के लिए आर्य समाज को अपने वैदिक दृष्टिकोण के साथ आगे आना चाहिए। पूरा विश्व एक परिवार है उस एक परिवार को संगठित एवं विकसित करने के लिए हमें ऐसे विकास की योजना दुनिया के सामने प्रस्तुत करनी होगी जो स्थाई और रचनात्मक हो। प्रो. विट्ठलराव जी ने आर्यजनों का आह्वान किया और कहा कि समाज में गिरते हुए मूल्यों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि हमें नशाखोरी, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड तथा विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संगठित होकर देश की जनता को नेतृत्व देना चाहिए।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी अपने प्रवचन में श्रोताओं को प्रेरित किया कि वे नई पीढ़ी के बच्चों एवं युवाओं को संस्कारित करने के लिए अपनी जिम्मेदारी निभायें। वर्तमान समय में जिस प्रकार से समस्त युवा वर्ग नैतिकता, धार्मिकता, देशभक्ति एवं परोपकार से विमुख होता जा रहा है, वह समाज एवं राष्ट्र के लिए घातक है। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज गन्नौर का अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार के लिए दिये गये सहयोग की भी प्रशस्ति की और आभार व्यक्त किया। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने भी यज्ञ के अवसर पर सभी यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली, उत्साहवर्द्धक रहा।

इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य एवं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष सम्मान किया गया। सर्वश्री हरिचन्द जी स्नेही–सोनीपत, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य एवं श्री धर्मेन्द्र आर्य, ब्र. रामफल आर्य आदि ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आर्य समाज के प्रधान श्री राजेश गावा, मंत्री श्री जगदीश अरोड़ा, कोषाध्यक्ष श्री दिनेश आहूजा तथा श्री प्रताप चन्द भूटानी, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती चन्द्रकान्ता दुडेजा, विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुषमा, श्रीमती योगिता, श्री रामलाल मल्होत्रा, श्री उमेश जी आर्य, श्री पीतम आहूजा, डॉ. रमेश लिंझारा आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अथक परिश्रम किया। श्री ओम प्रकाश वर्मा ने कार्यक्रम में मंच संचालन का दायित्व बड़ी कुशलता के साथ संभाला।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।